Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–346

B.A. (Part–III) Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - II

(निबन्ध एवं भाषा)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

Section–A **(Marks : 2 × 10 = 20)**

Note :– Answer all *ten* questions (Answer limit **50** words). Each question carries **2** marks.

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

Section–B **(Marks : 8 × 5 = 40)**

Note :– Answer any *five* questions out of seven. (Answer limit **200** words). Each question carries **8** marks.

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

Section–C **(Marks : 20 × 2 = 40)**

Note :– Answer any *two* questions out of four (Answer limit **500** words). Each question carries **20** marks.

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

प्रत्येक 2

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर सीमा 50 शब्द)।

   (i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल गद्य की किन दो विधाओं में प्रसिद्ध हैं ? इस संदर्भ में इनकी **दो** रचना के नाम भी लिखिए।

   (ii) निबन्ध में समास शैली की क्या विशेषता है ?

   (iii) हिन्दी के **चार** ललित निबन्धकारों का नाम बताइए।

   (iv) विचारात्मक निबन्ध और वर्णनात्मक निबन्ध में अन्तर बताइए।

   (v) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को सिद्ध करने वाली विशेषताएँ बताइए।

   (vi) प्रतापनारायण मिश्र के निबन्ध 'दाँत' का मूल संदेश बताइए।

   (vii) साहित्य में 'आलोचना' से क्या अभिप्राय है ? स्पष्ट कीजिए।

   (viii) विषय तथा शैली के आधार पर निबन्धों का वर्गीकरण कीजिए।

   (ix) 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबन्ध में 'मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है' को स्पष्ट कीजिए।

   (x) 'तमाल के झरोखे से' निबन्ध से विद्यानिवास मिश्र क्या संदेश देता है ?

खण्ड–ब

प्रत्येक 8

अग्रांकित सात में किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। उत्तर सीमा 200 शब्द।

2. यह एक साधारण नियम है कि जब कभी दो चित्त आपस में चक्कर खायेंगे तो एक-दूसरे पर कुछ-न-कुछ असर होगा ही । इसी असर को भली या बुरी सोहबत का असर कहते हैं। सोहबत का असर जरूर होता है। इसको रोकने की सामर्थ्य किसी को नहीं है। यह असम्भव है कि एक चित्त अपना असर दूसरे पर पैदा न करे या वह दूसरा भी उस असर को अपने ऊपर न आने दे; यह एक ऐसी अनदेखी बात है जिसका रोकना या उसे कुछ अदल-बदल कर ग्रहण करना दोनों का सामर्थ्य के बाहर है। जब यह बात है तो दृढ़ मन वाले, अपनी ऊँची समझ और ऊँचे खयालात से, कमजोर और दुर्बल चित्त वालों को ऐसा बेकाबू कर डालेंगे, जैसे बड़े से बड़े नशा का असर किसी को बेकाबू कर देता है। इसलिए दुर्बल चित्त वाले का दृढ़ मन वाले के साथ सम्पर्क कभी उपकारी नहीं है।

3. वैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है। जिससे हमें दु:ख पहुँचा है उस यदि हमने क्रोध किया और यह क्रोध हमारे हृदय में बहुत दिनों तक टिका रहा तो वह वैर कहलाता है। इस स्थायी रूप में टिक जाने के कारण क्रोध का वेग और उग्रता तो धीमी पड़ जाती है, पर लक्ष्य को पीड़ित करने की प्रेरणा बराबर बहुत काल तक हुआ करती है। क्रोध अपना बचाव करते हुए शत्रु को पीड़ित करने की युक्ति आदि सोचने का समय प्राय: नहीं देता, पर वैर उसके लिए बहुत समय देता है।

4. एक निर्दोष का प्राण बचाने वाला असत्य उसकी हिंसा का कारण बनने वाले सत्य से श्रेष्ठ ही रहेगा, एक क्रूर स्वामी की अन्यायपूर्ण आज्ञा को पालन करने वाले सेवक से उसका विरोध करने वाला अधिक स्वामिभक्त कहलायेगा और एक दुर्बल पर अन्याय करने वाले अत्याचारी को क्षमा कर देने वाले क्रोध जित् से उसे दण्ड देने वाला क्रोधी संसार का अधिक उपकार कर सकेगा। अन्य सिद्धान्तों के लिए भी यही सत्य है और रहेगा।

5. राष्ट्र भाषा के राजनीतिक महत्त्व को वह पूरी तरह स्वीकार करते थे और इसके लिए उन्होंने नेताओं पर यह दोष भी लगाया है कि वे इस सम्बन्ध में अधिक सचेष्ट नहीं रहे।" जब हमारे नेता हिन्दी साहित्य से बेखबर से हैं, जब हम लोग थोड़ी-सी अंग्रेजी लिखने की सामर्थ्य होते ही हिन्दी को तुच्छ और ग्रामीणों की भाषा समझने लगते हैं, तब यह कैसे आशा की जा सकती है कि हिन्दी में ऊँचे दर्जे के साहित्य का निर्माण हो।

6. मेरी समझ से आधुनिकता निज में कोई मूल्य या तथ्य नहीं बल्कि एक स्वभाव है, एक संस्कार-प्रवाह है, एक बोध-प्रक्रिया है। चाहे जो इसे मानें पर गुण-धर्म के हिसाब से 'स्वभाव' बोध-प्रक्रिया, संस्कार-प्रवाह आदि एक ही बातें हैं। इसे तथ्य या मूल्य मानने का भ्रम तभी होता है जब लोग संस्कार को ही मूल्य मान बैठते हैं, यथा प्रश्नाकुलता, आस्वादन में विश्वास या यायावरवृत्ति आदि जो संस्कार हैं या स्वभाव के अंग हैं, चिन्तन की असावधान अवस्था में मूल्य मानकर लोग आधुनिकता की मूल्य के तौर पर चर्चा करने लगते हैं। पर यदि उनसे बात आगे बढ़ाई जाय तो घुमा-फिराकर यही जबाब मिलेगा 'मूल्यहीनता ही आधुनिकता का मूल्य है।' पर यही भी कोई बात हुई! अत: शाब्दिक द्रविड़ प्राणायाम को छोड़कर हमें मान लेना चाहिए कि आधुनिकता मूल्य या तथ्य नहीं, स्वभाव या संस्कार-प्रवाह है। हाँ इतना माना जा सकता है कि इसके जनक कुछ मूल्य हों या इसके द्वारा या इसके माध्यम से कुछ मूल्यों का जन्म हो, जैसे उन्नीसवीं शती की 'पुरानी आधुनिकता' के विषय में; परन्तु स्वत: यह संस्कार-प्रवाह है, मूल्य नहीं।

7. लेकिन जिसे लौकिक साहित्य माना जाता है, उसमें भी नैतिक अनुभूति ही जीवन को पवित्र और सार्थक करती है। कह सकते हैं कि वहाँ आत्मानुभूति और मुल्यानुभूति का एकत्व प्रदर्शित है। महाभारत और रामायण, दोनों की मूल्यानुसन्धान की नैतिक साधना के सम्प्रेषण के माध्यम से आत्मानुभूति की रसदशा तक ले जाती है। लौकिक कवियों में सर्वोत्कृष्ट माने जाने वाले कालिदास में जीवन का भरपूर उपभोग तो है, पर जैसा श्री अरविन्द कहते हैं, वह तप द्वारा पवित्र किया गया है। जीवन का यह पवित्रीकरण, कर्म और नैतिकता का यह समन्वय ही भारतीय साहित्य में प्रसूत-बोध है जो सामाजिक जीवन में कर्मयोग की परम्परा—डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डे के शब्दों में, भारतीय सामाजिक जीवन की वास्तविक थाती-के रूप में दिखायी देता है।

8. प्रसाद की काव्य-भाषा समरूप और समरस है। उनमें निराला की भाँति प्रयोगों का बाहुल्य नहीं। जहाँ कहीं प्रसाद को उदात्त भावना की व्यंजना करनी पड़ी है, वहाँ उन्होंने भाषा के बदले छन्द-योजना की सहायता ली है और वीर रस के वर्णन में तो वे प्राय: नि:सहाय हो गये हैं। 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' जैसी कविता में वीर भाव की अपेक्षा विगर्हणा की मनोभावना प्रमुख रूप से निर्मित हुई है। हास्य, रौद्र और भयानक रसों की अपेक्षा प्रसाद की काव्य-भाषा वियोग, श्रृंगार और करुण रस के अधिक उपयुक्त बन सकी है। प्रसाद की भाषा में लाक्षणिक प्रयोगों के बाहुल्य की चर्चा हम ऊपर कर चुके हैं। वक्रोक्तिबहुल लाक्षणिक पदावली की योजना से प्रसाद की भाषा एक अभिनव भंगिमा से समन्वित होती है।

खण्ड–स

प्रत्येक 20

चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

9. निबन्ध की परिभाषा देते हुए उसके स्परूप और तत्त्वों का विवेचन कीजिए।

10. कुबेरनाथ राय के 'आधुनिकता : नयी और पुरानी' ललित निबन्ध की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

11. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रकाशन करते हुए उनके निबन्ध-सम्बन्धी दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

12. 'संत कबीर का समाज सुधारक रूप' विषय पर एक आलोचनात्मक निबन्ध लिखिए।